परमात्मा का 'ज्योति स्वरूप' सभी ने स्वीकारा

सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में ज्योति, लाइट, प्रकाश, नूर, ओंकार कहकर परमेश्वर परमसत्ता, निराकार, परमात्मा की सत्ता स्वीकारी।

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव की महिमा गाई हुई है। वो सर्वोच्च है, सर्वज्ञ है। जहाँ श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले रामेश्वरम ने शिवलिंग की पूजा की। गुरुवाणी में कहा है एकोंकार निराकार, मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा, जीसस में कहा गॉड इज़ लाइट। इस तरह निराकार ज्योतिर्मय परमात्मा का यादगार ज्योतिर्लिंग दिखाया है। जिसका सभी धर्मों में स्मरण किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार सृजनहार, पालनहार, वही परमसत्ता, परमात्मा परमेश्वर ही है।

विश्व के सभी धर्मों की आध्यात्मिक शिक्षाओं को ध्यान से देखने पर प्रस्फुटित होता है कि भले ही भाषाएं, रीति-रिवाज़ और उपासना-पद्धतियां भिन्न हों, परंतु सर्वशक्तिमान परमात्मा का स्वरूप एक ही है - निराकार, ज्योति स्वरूप, और कल्याणकारी। मानव इतिहास में चाहे जिस युग में धर्म प्रकट हुआ हो, प्रत्येक ने परम सत्ता को अपने-अपने तरीके से, परंतु समान भाव से स्वीकार किया है।

भारतीय धर्म ग्रंथों में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीता ज्ञान परमात्मा के निराकार और परमपिता स्वरूप की गहरी झलक देता है। युद्धभूमि पर अर्जुन को दिए गए उस परम ज्ञान को ईश्वर को अजन्मा, अविनाशी और प्रकाशमय बताया गया है। इसी प्रकार श्रीराम ने भी रावण से युद्ध से पूर्व रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना कर उस परम ज्योति-स्वरूप ईश्वर की आराधना की, जो बताता है कि ईश्वर कोई देहधारी नहीं, बल्कि प्रकाश स्वरूप पिता है।

इन सभी धर्मों की शिक्षाओं का सार एक ही बात को उजागर करता है- निराकार ज्योति लिंग परमात्मा ही समस्त सृष्टि के रचनाकार, संचालक और पालक हैं। मानवता के विविध मार्ग अंततः उसी एक परम सत्य तक पहुँचते हैं। नाम भले अलग हों, परंतु लक्ष्य एक है - परमपिता, वह ज्योति स्वरूप परमात्मा, जो अनादि भी है और अविनाशी भी।

नूर ए इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का-मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वो लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम व ज्योति स्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अतः सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप में उस परम सत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। उसके अलावा विश्व भर के सभी वेद, शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथ आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योतिस्वरूप की व्याख्या की गई है। वो ही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता, परमपिता परमेश्वर, परमात्मा शिव हैं।

ईसाई मत में भी "गॉड इज़ लाइट" कहकर प्रभु को ज्योति स्वरूप माना गया है। चर्च में जलाई जाने वाली मोमबत्ती उसी अनंत प्रकाश का प्रतीक है।

निराकार, निर्वैर, सत्नाम

सिक्ख धर्म में गुरुनानक देव जी ने कहा है कि एकोंकार निराकार, उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सत्नाम है, जिसको कभी कोई काल नहीं खा सकता। ये सभी महिमा गुरु वाणी में लिखी गई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्नाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

खुशी के लिए शिवरात्रि के पावन पर्व पर लें पाँच संकल्प

सबकी सुबह स्वर्णिम सुबह हो तो कितना अच्छा हो। उठना एक बात, तरोताज़ा होकर उठना अलग बात। हम सबकी दिनचर्या आज कल थोड़ी उलझी हुई सी है। कारण मानसिक, शारीरिक थकान भी है, कुछ चिंता, दुःख, अशांति भी है। ऐसे में स्वस्थ और सुदृढ़ जीवन की कल्पना तो नहीं कर सकते ना! परमात्मा के बच्चे होने के नाते उसके जैसा होना हमारी नियति होनी चाहिए। अगर वैसा ही हो जाए तो आप सोचो आपसे लोग प्रभावित भी होंगे और आपको फॉलो भी करेंगे। इस पावन शिवरात्रि पर्व पर अगर हम कुछ संकल्पों पर ध्यान दें तो अपने को उस लायक बना सकते हैं। ये हमारे लिए व्रत भी होगा, और यही उपवास भी।

सुबह की शुरुआत मेडिटेशन से- पुराने समय में सभी सुबह उठकर सबसे पहले एक ऐसा संकल्प करते थे कि आज का पूरा दिन मेरा खुशी वाला हो, सफल हो, सबसे सहयोग मिले, आदि-आदि। और उसी संकल्प में भगवान का ध्यान भी करते थे। चाहे उन्हें समझ आए न आए लेकिन ध्यान अवश्य करते थे। तो ऐसे क्यों न हम अपनी दिनचर्या फिर से शुरू करें।

सदा सभी के प्रति शुभ भावना रखेंगे- दुआएं कमाने का साधन है सभी को खुशी देना। सबके भले के बारे में सोचना और सबको आगे बढ़ते देखना, सभी के प्रति शुभ भावना रखना ये हमारी दिनचर्या का हिस्सा हो। ये भी हमें सफलता दिलाता है।

प्रकृति के प्रति जागरूक रहेंगे- वैसे तो अगर कोई हमें सबकुछ मुफ्त में देता है तो वो है हमारी प्रकृति। लेकिन हमारी भी सामाजिक ज़िम्मेदारी है कि हम भी उनके प्रति जागरूक रहें। अगर प्रकृति शुद्ध है तो हम सबका शरीर भी स्वस्थ होगा और साथ-साथ बाहर का वातावरण भी शुद्ध रहेगा। तो कम से कम अच्छे भाव प्रकृति को दो। जल और ऊर्जा का संरक्षण करें।

केवल शुभ कर्म करेंगे- लोगों से पूछो तो हमेशा कहते हैं कि मैं तो कर्मयोगी हूँ। मेरे से तो बुरा काम होता नहीं है। लेकिन परमात्मा कहते हैं कि हम सभी को जो भी कर्म करना है वो केवल परमात्मा के अर्थ करेंगे तो वो कर्म शुभ कर्म माना जाएगा। बाकी जो भी हम कर्म करते हैं वो कर्म हमारे स्वार्थ के लिए तो हो सकता है लेकिन अगर परमात्मा का नाम शामिल हो जाए तो परमार्थ के लिए होता है।

सात्विक भोजन ही स्वीकार करेंगे- आहार, विचार को जन्म देता है। अगर उसमें सात्विक आहार हो तो सोने पर सुहागा। शाकाहारी होना आम बात है। लेकिन सात्विक होना खास बात है। सात्विक भोजन में बिना प्याज, लहसुन के परमात्मा की याद में बना भोजन ही हम स्वीकार करें तो हमारा मन अति शुद्ध होता चला जाएगा। और हमारी पवित्रता भी बढ़ेगी।

इन्हीं पांच शुभ संकल्पों से अपनी दिनचर्या की शुरुआत करें और इसको लम्बेकाल तक अभ्यास में लाएं तो जीवन रचनात्मक बन जाएगा।

धरा पर परमात्म अवतरण की आवश्यकता क्यों?

आज संसार जिस दहलीज़ पर खड़ा है वहाँ चारों ओर असुरक्षा, अशान्ति, कलह और मूल्यहीनता की गहरी छाया दिखाई देती है। मानव ने विज्ञान, तकनीक, सुविधाओं में अत्यधिक प्रगति की है लेकिन मन की शांति, प्रेम और पवित्रता लगातार दूर होती जा रही है। आज का मनुष्य बाहरी दुनिया को तो संवार रहा है, किंतु अपने अंतर-चेतना, संस्कारों और चरित्र को सँवारने में असमर्थ हो गया है। ऐसे समय में परमात्मा के अवतरण की आवश्यकता और भी महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

मनुष्य कितना भी महान क्यों न हो, वह त्रुटिरहित नहीं है। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से प्रभावित हो जाता है। इन पाँच विकारों से मुक्त हुए बिना, दुनिया में स्थायी शांति और सुख स्थापित नहीं हो सकते। मनुष्य स्वयं इन विकारों का दास बनकर जी रहा है - तो वह दूसरों को कैसे मुक्त करेगा? यही कारण है कि कुछ कार्य ऐसे हैं जो मनुष्य नहीं कर सकता, जिन्हें केवल परमात्मा ही कर सकते हैं :

1. आत्मा को उसके मूल स्वरूप शांति, पवित्रता, प्रेम और शक्ति का सच्चा ज्ञान देना।
2. निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी स्थिति का वास्तविक अनुभव कराना।
3. पुरानी, विकृत हुई सृष्टि का पुनः सृजन करना, जिसे शास्त्रों में सत्ययुग या स्वर्णिम युग कहा गया है।
4. कर्मों का स्टीक ज्ञान और पवित्रता की शक्ति देना, ताकि आत्माएं पुनः उच्चतम बन सकें।

आज संसार में जो अराजकता, नैतिक पतन और मानसिक तनाव है, वह स्पष्ट संकेत है कि मानव प्रयासों से अब यह विश्व सुधरने वाला नहीं। ऐसी घड़ी में परमात्मा स्वयं पिता, शिक्षक, सतगुरु बनकर आता है और हमें राजयोग की शिक्षा देकर भीतर से रूपांतरित करता है।

इसलिए आज सबसे बड़ी ज़रूरत परमात्मा के इस दिव्य अवतरण की है - क्योंकि उसी के माध्यम से ही नई, श्रेष्ठ, पवित्र और शांतिमय दुनिया पुनः स्थापित हो सकती है।

चौथा और अत्यंत महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है - आत्माओं को मुक्ति और जीवन मुक्ति की प्राप्ति कराना। परमात्मा योगबल द्वारा आत्माओं के पाप कर्मों का बोझ समाप्त करते हैं, जिससे वे बंधनों से मुक्त होकर सुख-शांति का अनुभव कर सकें। इस प्रकार परमात्मा का आगमन मानवता के उद्धार, संस्कार परिवर्तन और दिव्य विश्व व्यवस्था की पुनर्स्थापना के लिए होता है। उनका आगमन ही सृष्टि की नई सुबह का आरंभ है।

-: स्थानीय सेवाकेन्द्र :-